



# सुंदर भारत

## सुंदरम पर्यावरण यात्रा

# आशीर्वाद एवं विशेष मार्गदर्शन



मध्यप्रदेश के मुख्यमंत्री आदरणीय श्री शिवराज सिंह चौहान जी के साथ में  
पौधरोपण करते हुए सुंदरम तिवारी



पूर्व मुख्यमंत्री छत्तीसगढ़ आदरणीय डाक्टर रमन सिंह जी के  
साथ में उनके निवास स्थान पर सुंदरम तिवारी



उत्तराखण्ड के मुख्यमंत्री आदरणीय श्री पुष्कर सिंह धामी जी  
के निवास पर यात्रा के दौरान सुंदरम तिवारी



हिमाचल यात्रा के दौरान तत्कालीन मुख्यमंत्री आदरणीय श्री  
जयराम ठाकुर जी के साथ उनके निवास पर सुंदरम तिवारी



आदरणीय श्री गोपाल आर्य जी पर्यावरण संरक्षण गतिविधि के राष्ट्रीय संयोजक (RSS) के साथ दमनदीव स्वच्छ सागर अभियान कार्यक्रम में उनके द्वारा सम्मानित किया गया

# इस यात्रा की आवश्यकता क्यों ?

चीन के महान दार्शनिक लाओत्जू का कहना था कि दस हजार मील की यात्रा का प्रारंभ एक नन्हे कदम से होता है। मेरी अठारह हजार किलोमीटर की साइकिल यात्रा की शुरुआत ऐसी ही एक नन्हीं घटना से हुई। एक सुबह मैं अपने परिवार के साथ चाय की चुस्कियाँ लेते समय अखबार पढ़ रहा था, तभी मेरी नजर उस दिन के ए.क्यू.आर्डि. यानि एयर क्लालिटी इंडेक्स (वायु गुणवत्ता सूचकांक) पर पड़ी। महानगर की हवा में फैले प्रदूषण के जहर को देखकर मेरा मन चिंता से भर गया। जब हवा में ही जहर भर गया हो तो इंसान कहाँ जाए। कुछ दिनों बाद ऐसा संयोग हुआ कि मुझे अपने पैतृक गाँव जाना पड़ा। वहाँ की शुद्ध और स्वच्छ हवा में सांस लेकर मेरा मन पुलकित हो उठा। मेरे मन में प्रश्न उठा कि ऐसी साफ हवा मेरे नगर या महानगर में मिलनी कठिन क्यों हो गई है। मेरे प्रश्न का उत्तर चारों ओर फैला हुआ था, चार कदम आगे से लेकर क्षितिज तक।

मेरे गाँव में जमीन का हर कोना पेड़-पौधों से भरा हुआ था। वो प्रकृति की हरियाली ही थी जिसने वातावरण को इतना स्वच्छ और स्वस्थ बना रखा था। शहर और गाँव की हवा में इतने बड़े अंतर को महसूस करने के बाद मेरा मन और भी उद्धिष्ठ हो गया। कुछ किलोमीटर के फासले पर ही हवा अमृत से विष में कैसे बदल जाती है, यह जानने के लिए मेरा मन उत्सुक हो उठा। समस्या क्या है और इसका क्या उपचार हो सकता है, यह खोजने की मन में प्रेरणा जाग गई।

अगले कुछ सप्ताह मैंने यह पढ़ने में लगाए कि पर्यावरण कौन सी त्रासदी झेल रहा है। मैंने यह जाना कि धरती का दस प्रतिशत हिस्सा हिम से आच्छादित है क्योंकि वहाँ हजारों मीलों तक ग्लेशियर हैं। जो ग्लेशियर हजारों सालों से धरती पर सुरक्षित रहे, वो प्रदूषण के कारण होने वाली ग्लोबल वार्मिंग के कारण पिछले सौ सालों में बुरी तरह से पिघल रहे हैं। आर्कटिक महासागर का 95% हिम पिघल चुका है, और यही रफ्तार बनी रही तो सन 2100 तक एक तिहाई ग्लेशियर के पिघल जाने की संभावना है। इससे बढ़ने वाले जल स्तर के कारण समुद्र के किनारे बसे कई शहर ढूब जाएंगे। हमारे चारों ओर की हवा में इतने खतरनाक रसायन भर चुके हैं कि उनसे सांस लेना शरीर में जहर भरने के समान है, जिससे दिल, फेफड़े, यकृत और अन्य अंगों की जानलेवा बीमारी हो सकती है। छोटे-छोटे बच्चों को सांस लेने में तकलीफ हो रही है। जो बचपन किलकारी से भरा होता था, वो दमे के कारण होने वाली खांसी से भर चुका है। जो समय हरियाली की छाँव में बीतना चाहिए था वो गैस चैम्बर में बदल चुके शहरों में बीत रहा है।

मैंने यह भी जाना कि समस्या पर चिंता करने से समस्या खत्म नहीं होती, बल्कि समस्या पर काम करना होता है। कहते हैं, अकेला चना भाड़ नहीं फोड़ सकता। मैंने इस कथनी पर कभी विश्वास नहीं किया। मेरा मानना है कि अकेला चना चाहे तो क्रांति ला सकता है क्योंकि वो एक बीज होता है जिसमें एक विशाल पेड़ की संभावनाएँ छुपी होती हैं। मेरी प्रेरणा का स्रोत तो विश्वकवि रवींद्रनाथ टैगोर की एक प्रसिद्ध कविता रही है जिसमें वो कहते हैं, “तेरी आवाज पे कोई ना आए तो फिर चल अकेला रो।”



ગુજરાત કે સુરેંદર નગર મેં આયોજિત વાટેશ્વર વન મહોત્સવ મેં ગુજરાત કે મુખ્યમંત્રી આદરણીય શ્રી ભૂપેન્દ્ર ભાઈ પટેલ જી એવં ઉપસ્થિત મંત્રીગણ ગુજરાત સરકાર દ્વારા સમ્માનિત કિયા ગયા

મેરે પાસ ન પૂંજી થી, ન હી મેરે સિર પર કિસી બડી હસ્તી યા સંગઠન કા હાથ થા। સાથ મેં થી બસ એક સાઇકિલ, પૌથોં કે કુછ બીજ ઔર અદ્ય સાહસ કે સાથ મન કા વિશ્વાસ। ફિર એક દિન મૈને લાઓન્ઝૂ કી બાત માનતે હુએ હજારોં મીલ કી યાત્રા કા પ્રારંભ અપની સાઇકિલ કા પૈડલ મારકર કર હી દિયા। જૈસે-જૈસે સાઇકિલ આગે બઢતી ગઈ, રાસ્તા બનતા ગયા। આસ-પાસ કી ઉપજાઊ જમીન મેં બીજ ડાલતે હુએ મૈં એક એસી યાત્રા પર નિકલ ગયા જિસકી લંબાઈ કા અનુમાન મુજ્જે ઉસ સમય કર્તાઈ નહીં થા।

7 અપ્રૈલ, 2022 કી એક સુબહ શુરૂ હુઈ વો યાત્રા ચૌદાહ મહીનોં તક અનવરત ચલતી રહી। ઇસ દૌરાન અઠારહ હજાર મીલ કી દૂરી તથ હુઈ। યાત્રા કે દૌરાન 02 લાખ 02 હજાર 441 પૌથે લગાએ, જિનમેં નબ્બે પ્રતિશત પૌથે અભી ભી જીવિત હૈનું। તકરીબન 10 લાખ લોગોં સે જલ, ભૂમિ, જંગલ ઔર પશુઓં કે સંરક્ષણ પર વિચાર-વિમર્શ હુઆ, ઔર સાથ મેં સ્કૂલ, કોલેજ, સામાજિક ઔર ધાર્મિક સંસ્થાનોં મેં ચર્ચા હુઈ। ઇસ પ્રયાસ કો સમાજ મેં ઇતના સરાહા ગયા કિ 350 સે ભી અધિક ન્યૂજ ચૈનલોં મેં યહ ખબર બના, કરીબ 60 રેડિયો ચૈનલોં ને ઇસ પર સાક્ષાત્કાર ઔર કાર્યક્રમ પ્રસારિત કિયે। પદ્મ શ્રી, પદ્મ ભૂપ્રણ ઔર રાષ્ટ્રપતિ સમ્માન સે સમ્માનિત લોગોં ને ઇસ કામ કો સરાહા। ગુજરાત કે મુખ્યમંત્રી શ્રી ભૂપેન્દ્ર પટેલ ને સ્વયં એક આયોજન મેં સમીક્ષિત હોકર ઇસ કામ કી પ્રશંસા કી।

રવીંદ્ર નાથ ટૈગોર ને કહા હૈ કિ જવ આપ યહ જાનતે હુએ પૌથે લગાતે હું કિ આપ કભી ભી ઇસકી ઢ્છાવ મેં નહીં બૈઠ પાએંગે તો આપને જીવન જીને કી કલા સીખ લી હૈ। આજ મૈં યહ દિલ સે કહ સકતા હું કિ જીવન જીને કી કલા સીખને કે લિએ મૈને યથાશક્તિ પ્રયાસ કિયા હૈ। ઇસ યાત્રા કે દૌરાન લગાએ પૌથોં સે અગર વર્તમાન ઔર આગામી પીડિયોં કો સાંસ લેને કી શુદ્ધ હવા મિલતી હૈ તો મૈં સમજુંગા કિ મેરા જીવન સાર્થક હો ગયા।

# कैसे शुरू हुई यात्रा और क्या-क्या हुआ यात्रा में?

जब मैंने यात्रा का मन बना लिया तो मेरे सामने सबसे पहले यह प्रश्न उठा कि मैं यात्रा किस वाहन से करूँ। पैदल यात्रा करना मुझे बहुत आकर्षक नहीं लगा क्योंकि इसमें अधिक थम तो लगेगा पर मैं कम दूरी तय कर पाऊँगा। चूंकि इस यात्रा का उद्देश्य प्रदूषण के विषय में लोगों को जागरूक करना और हरियाली को बढ़ावा देना था, इसलिए मैं जैविक तेल से चलने वाले वाहनों का इस्तेमाल नहीं करना चाहता था। उनसे प्रदूषण होता है और यह मेरे उद्देश्य के ठीक विपरीत परिणाम लाता था। तब मेरे सामने एक ही विकल्प बचा जो सारे विकल्पों में सर्वोत्तम था। दो पहियों से चलने वाली साइकिल। बचपन से ही मुझे साइकिल की सवारी का शौक था और अब वही शौक मेरे जीवन के सबसे बड़े उद्देश्य में सहायक बनने वाला था। न इसमें ईंधन लगता है, न इससे प्रदूषण बढ़ता है, और न ही इसे चलाने में कोई खर्च आता है। साथ ही इसे चलाने से सेहत अच्छी होती है। चूंकि प्रदूषण का सबसे बड़ा नुकसान सेहत को होता है, इसलिए साइकिल यात्रा अपने आप में यह संदेश देती है कि हमें सेहत को सर्वोपरि मानना चाहिए। अतः मैंने अपनी साइकिल, हेलमेट और बैग उठाया, और इस लंबी और उद्देश्यपूर्ण यात्रा के लिए चल पड़ा।

यात्रा शुरू होते ही एक चुनौती आ खड़ी हुई। चूंकि मेरे पास उस समय मेरे पास धनार्जन का कोई स्रोत नहीं था, इसलिए मैं नहीं जानता था कि महीनों चलने वाली यात्रा के दौरान में रहने, खाने और पौधे लगाने के लिए धन कहाँ से लाऊँगा। फिर मुझे याद आया कि सनातन धर्म वाले इस देश में धन की समस्या ने किसी भी इंसान को काम करने से नहीं रोका है। अगर आप कोई अच्छा काम करने निकलते हैं तो मदद करने वालों की कमी नहीं होती। मेरे साथ भी ऐसा ही हुआ। जैसे-जैसे लोगों को पता चला कि मैं समाज और पर्यावरण के लिए यह काम करने निकला हूँ, वैसे-वैसे मदद करने वालों की कतार लगती गई। मैं जिस शहर और गाँव गया, वहाँ लोगों ने सहर्ष मुझे अपना अतिथि बनने का आमंत्रण दिया। पौधों के लिए बीज, खाद और वृक्षारोपण के लिए अन्य जरूरी चीजें खरीदने के लिए लोगों ने खुले दिल से दान दिया। मुझे जहाँ एक की आशा थी, वहाँ मुझे दस मिला। मैंने यह सीखा कि अगर लोगों में प्रेरणा जग जाए तो वो हर रास्ते खोल देते हैं। हमारा देश पाँच हजार वर्षों से अविराम अपनी संस्कृति और समाज को सहेजे हुए है, उसका एक कारण यहाँ के लोगों का उदार भाव भी है। मैं महीनों तक भिक्षाटन करके अपना गुजारा करता रहा तथा लोगों के सहयोग से से लाखों पौधों को लगाने का काम बिना किसी विवर के करता रहा।

यात्रा के आरंभ में सबसे सुखद बात यह हुई कि पहले कदम पर ही वन मंत्री डॉक्टर अरुण सक्सेना का वरद हस्त मिला और उन्होंने हरी झंडी दिखाकर मेरी राह को प्रशस्त किया। यात्रा के दौरान कई गणमान्य लोगों का साथ और आशीर्वाद मिला जिन्होंने अपने-अपने क्षेत्र में उल्लेखनीय योगदान दिए हैं। इनमें से एक हैं पद्मश्री प्राप्त महान उद्योगपति श्री साऊजी ढोलकिया। हीरे के व्यापार में अपनी साख बनाने के बाद इन्होंने समाज कार्य में उत्कृष्ट काम किया है।





पद्मश्री श्री दलिपलीरमैया जी

दूसरी महान हस्ती जिनका मुझे आशीर्वाद मिला, वो हैं पद्मश्री प्राप्त दरीपलीरमैया। 'चेतलारमैया' के नाम से मशहूर ये समाज सेवक एक लाख से भी अधिक पेड़ लगाकर खम्मम (तेलंगाना) जिले में हरियाली को फैलाने में महान सहयोग कर चुके हैं। उन्होंने यह कार्य बचपन में ही शुरू कर दिया था और पाँच दशकों से इसमें अनवरत लगे हुए हैं।

अपनी काष्ठ कला से लगभग चार सौ नक्सली बंदियों का जीवन सँवारने वाले पद्मश्री प्राप्त श्री अजय मंडावी का भी मुझे सहयोग मिला। उनके द्वारा लाए गए परिवर्तन के कारण वो बंदी जेल से निकालने के बाद सम्मान का जीवन जी रहे हैं।



पद्मश्री श्री अजय मंडावी जी

इन हस्तियों के अलावा मुझे यात्रा में कदम-कदम पर राजनेताओं, प्रशासनिक अधिकारियों, समाजसेवियों, पत्रकारों, ग्राम प्रधानों, शिक्षकों, छात्रों और अन्य जिम्मेदार नागरिकों का सहयोग मिलता रहा। उनकी अनुकंपा और प्रेरणा से मैं यात्रा में नए-नए मुकाम हासिल करता रहा और हरियाली के प्रचार प्रसार में और अधिक उत्साह से जुड़ गया पूरी यात्रा के दौरान में। मैं अट्टाईस राज्यों में गया, जहां मैंने खासकर युवाओं और किसानों से इस विषय पर लंबी चर्चा की। इन चर्चाओं से मैंने यह जाना कि लोगों में पर्यावरण के लिए जागरूकता तो बहुत है और वो भरसक प्रयत्न भी कर रहे हैं, लेकिन हमें जमीनी स्तर पर परिणाम नहीं दिख रहे हैं। जरूरत है कि अधिक ऊर्जा के साथ भागीरथ प्रयास किया जाए ताकि वृक्षारोपण अभियान को युद्ध स्तर पर बढ़ावा देकर प्रदूषण की समस्या का यथाशीघ्र निदान पाया जा सके। निजी स्तर पर आगे आकर काम किया जाए, तभी हम स्वयं को और आने वाली पीढ़ियों को शुद्ध वायु दे सकेंगे।

# समाज का सहयोग और प्रतिसाद

भारत सरकार के 'स्वच्छ इंडिया' और 'फिट इंडिया' मिशन से प्रेरणा लेकर छब्बीस वर्ष की उम्र में मैंने जो साइकिल यात्रा प्रारंभ की, उसके कई अच्छे परिणाम आए। लोगों के सहयोग से पूरे देश में 02 लाख, 02 हजार, 441 पौधे लगाए जा चुके हैं। चौदह महीनों की इस यात्रा में करीब 10 लाख लोगों के साथ इस विषय पर संवाद सम्पन्न हुआ। साइकिल से प्रतिदिन पचास किलोमीटर की यात्रा करते हुए मैंने विश्वविद्यालय परिसर, पुलिस स्टेशन, नगर पालिका परिसर, स्कूल आदि जगहों पर सबके साथ पौधारोपण का कार्य सम्पन्न किया। देश की नई पीढ़ी में जागरूकता लाने के लिए मैंने हजारों की संख्या में स्कूल और कॉलेज के छात्रों के साथ मंच साझा किया। मैंने रास्ते में क्षेत्रवासियों को पौधारोपण के साथ-साथ पर्यावरण, जल और वायु संरक्षण पर भी अपने विचारों से अवगत कराया। हम सभी इस निष्कर्ष पर पहुंचे कि अगर हमने यथाशीघ्र ठोस कदम नहीं उठाए तो आगे चलकर बुरे परिणाम आ सकते हैं।

आपको यह जानकर शायद आश्चर्य हो कि सारे जीवन और पर्यावरण के लिए लाभदायक नहीं होते। इसलिए सरकारों ने कई पौधों को प्रतिबंधित पौधों की श्रेणी में डाला है ताकि लोग उनका रोपण नहीं कर सकें। ऐसा ही एक पौधा है कोनोकार्पस जो अत्यधिक मात्रा में जल का उपयोग करता है जिसके कारण जमीन में जल का स्तर काफी नीचे चला जाता है। यह वाष्पीकरण की प्रक्रिया को काफी तेज कर देता है तथा इसकी जड़ें पाइप को भी बंद कर देती हैं। इसके कारण मनुष्यों में खांसी, सर्दी, अस्थमा और साँसे से संबंधित कई बीमारियाँ बढ़ती हैं। मैंने साइकिल यात्रा के दौरान इसकी बुराइयों पर लोगों का ध्यान दिलाया तथा इसे प्रतिबंधित कराने की मुहिम में अपना सहयोग दिया। यह प्रयास रंग लाया है और आज इस पौधे पर प्रतिबंध लगने के साथ-साथ सरकार ने इसकी कटाई का भी आदेश दिया है।

साथ ही मैंने लोगों में अपने कार्यक्रमों द्वारा यह संदेश भी फैलाया कि वो अपने क्षेत्र के लिए अनुकूलित पौधे ही लगाएँ, जिन्हें हम नेटिव प्लांट कहते हैं। ये वो पौधे होते हैं जो किसी भौगोलिक स्थान में प्राकृतिक रूप से पिछले सैकड़ों या हजारों वर्षों में विकसित हुए हैं। इनके कारण पर्यावरण में संतुलन बना रहता है। लोगों ने इस बात को समझा और काफी उत्साह से इस दिशा में काम कर रहे हैं। अब वे पौधारोपण के दौरान नेटिव प्लांट पर ही फोकस कर रहे हैं।



आदरणीय श्री सुरेश भैया जी जोशी जी(,RSS)लोकसभा अध्यक्ष माननीय ओम विरला जी, राज्यमंत्री भारत सरकार श्री जितेन्द्र जी,  
आदरणीय श्री कपिल खन्ना जी द्वारा संत ईश्वर सेवा सम्मान 2023 प्राप्त करते हुए नई दिल्ली



10 दिल्ली विधानसभा द्वारा आयोजित सम्मान समारोह में आशीर्वाद माननीय अध्यक्ष विधानसभा दिल्ली सरकार श्री राम निवास गोयल जी, विधायक श्री मदनलाल जी एवं उपस्थित समस्त विधायक गण दिल्ली राज्य



इंदिरा गांधी राष्ट्रीय कला केंद्र नई दिल्ली पर्यावरण संरक्षण सम्पूर्ण भारत साईकिल यात्रा के उपरांत उपस्थिति एवं आशीर्वाद पद्मश्री आदरणीय श्री राम बहादुर राय जी अध्यक्ष IGNCA, डॉक्टर अरविंद भालीकर जी अध्यक्ष हिंदुस्थान समाचार, श्री जितेन्द्र तिवारी जी संपादक हिंदुस्थान समाचार, आदरणीय श्री राकेश जैन जी, आदरणीय श्री कपेल खन्ना जी

# બાળકૃત્તન

एक યાત્રા કા અંત દૂસરી યાત્રા કા પ્રારંભ હોતા હૈ। વાતાવરણ કે લિએ કી ગર્દી યહ સાઇકિલ યાત્રા સિફ એક પડાવ થી, મંજિલ નહીં। ઇસ વર્ષ દિસંબર મેં પ્રારંભ હોને વાલી મેરી દૂસરી યાત્રા પર્યાવરણ કી બેહતરી કે લિએ ઉઠાયા ગયા દૂસરા કદમ હૈ, જિસકે કેન્દ્ર મેં નદિયોં કે મહત્વ કો સમજના ઔર સમજાને કે સાથ હી ઉનકા સંરક્ષણ હોગા।

હમારે દેશ મેં કુલ મિલાકર પંદ્રહ હજાર નદિયાં હૈનું, જિનમેં સાઢે ચાર હજાર સૂખ ચુકી હૈનું। કુછ મુખ્ય નદિયોં કો છોડકર બાકી સારી નદિયાં સહાયક નદી કહ્લાતી હૈનું, જિન પર હમારા ધ્યાન કમ જાતા હૈ। હમ મુખ્ય નદિયોં કે જીર્ણોદ્વાર કે લિએ તો કદમ ઉઠાતે હૈનું, પર સહાયક નદિયોં કી અનદેખી કરતે હૈનું। મેરી અગલી યાત્રા કા ઉદેશ્ય એક સહાયક નદી કા જીર્ણોદ્વાર હૈ જિસકા નામ સર્ઈ નદી હૈ।

યહ નદી ઇતની પ્રાચીન હૈ કે ઇસકા ઉલ્લેખ રામાયણ મેં ભી મિલતા હૈ। જીવનદાયિની માની જાને વાલી ઇસ નદી કી ધારા અબ ઠહર ગર્દી હૈ। ઇસકા પાની ઇતના સૂખ ગયા હૈ કિ લોગ ઇસે પૈદલ પાર કર લેતે હૈનું। ઇસકે ગઢુંમેં કાલા પાની ભર ગયા હૈ, જિસકે સ્પર્શ માત્ર સે શરીર મેં ખુજલી હોને લગતી હૈ।

દિસંબર 2023 સે ફરવરી 2024 તક ચલને વાલી મેરી અગલી યાત્રા હરદોઈ જિલે કે ભિજવાન ઝીલ સે પ્રારંભ હોગી, જો સર્ઈ નદી કા ઉદ્મ સ્થળ હૈ। ઇસ નદી કે તટવર્તી વિભિન્ન જિલોં સે હોકર ગુજરને વાલી યહ પદ્યાત્રા સાત સૌ પંદ્રહ કિલોમીટર લંબી હોગી। ઇસ યાત્રા કે દૌરાન આસ-પાસ કી જનતા કે સહાયક નદિયોં કી મહત્તા કે બારે મેં જાગરૂક કરને કા પ્રયાસ હોગા।



આચાર્ય શ્રી બાલકૃત્તન જી



ભારત સરકાર કે ઉપભોક્તા મામલે ખાદ્ય ઔર સાર્વજનિક વિતરણ એવં પર્યાવરણ જલવાયુ પરિવર્તન રાજ્યમંત્રી આદરણીય શ્રી અન્ધ્રાની કુમાર ચૌબે જી



भारत के महामहिम उपराष्ट्रपति श्री जगदीप धनखड़ जी एवं उनकी धर्मपत्नी श्रीमती सुदेश धनखड़ जी, पूर्व मुख्य न्यायाधीश नितिन कोहली जी, आदरणीय श्री कपिल खन्ना जी द्वारा प्रशस्ति पत्र महामहिम उपराष्ट्रपति जी के निवास पर प्राप्त करते हुए सुंदरम तिवारी

## पुस्तक का प्रयास

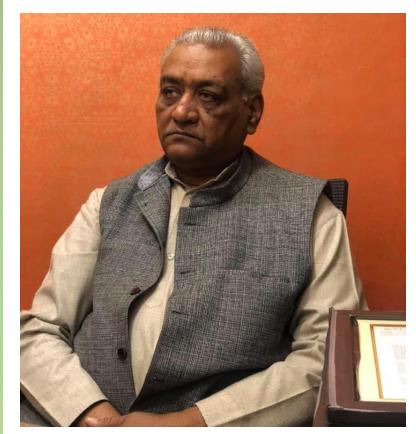
किसी भी प्रयास को लोगों तक पहुंचाने और उसका संदर्भ रखने के लिए पुस्तक का बहुत महत्व होता है। पिछले छह सालों में मेरे द्वारा किये कार्यों का विवरण एक पुस्तक के रूप में आप लोगों तक पहुंचे, यह भी एक प्रयास है। इसमें पर्यावरण संरक्षण से संबंधित सारे कार्यों और बिंदुओं पर प्रकाश डाला गया है। देश में 18, 319 स्कूल, कॉलेज, गाँव, शहर और विश्वविद्यालयों में मैंने जो कार्यक्रम किये, उनके बारे में आपको इस पुस्तक में जानकारी मिलेगी। संकल्प सेवा के नाम से सवा लाख गोशालाओं और विद्यालयों में मैंने वृक्ष लगाए। लखनऊ से शुरू होकर पूरे देश के प्रमुख भागों से होकर गुजरने वाली इस यात्रा के दौरान मैंने जल, जमीन, जंगल और जानवर के बारे में लोगों के मन में चेतना जगाई। इसका भी सूक्ष्म विवरण आपको इस पुस्तक में मिलेगा।

आशा करता हूं कि पर्यावरण संरक्षण के लिए मेरी ओर से बड़े यज्ञ की एक छोटी से समिधा को आप सभी का स्वेह प्राप्त होगा।

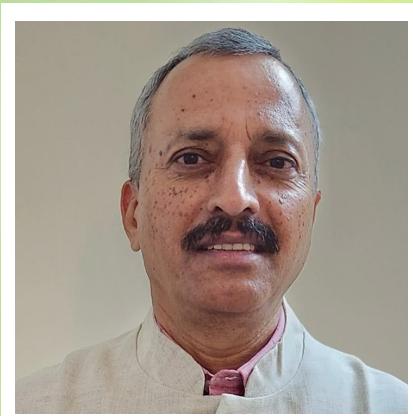
# आशीर्वाद एवं विशेष मार्गदर्शन



आदरणीय श्री अजीत कुमार महापात्रा जी अखिल भारतीय  
गौ सेवा प्रमुख राष्ट्रीय स्वयं सेवक संघ



आदरणीय श्री राकेश जैन जी अखिल भारतीय सह संयोजक  
पर्यावरण संरक्षण गतिविधि (राष्ट्रीय स्वयं सेवक संघ)



मोहन चंद्र परगाई भारतीय वन सेवा अधिकारी जो तेलांगाना में प्रधान मुख्य  
वन संरक्षक पद पर पदासीन हैं, लगभग सभी राज्यों के वनाधिकारियों  
से जुड़ने और कार्यक्रम को सफल बनाने में सक्रिय योगदान दिया



आदरणीय श्री मुकेश विनायक खांडेकर जी क्षेत्रीय संगठन मंत्री  
इंद्रप्रस्थ क्षेत्र विश्व हिंदू परिषद

# सुन्दरम तिवारी

9015810521

sunderampharma@gmail.com

 सुन्दरम तिवारी  @kISANSUNDRAM  kishansundaram